केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-227 107 उ.प्र.(भारत)
Central Institute for Subtropical Horticulture
Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-227 107 U.P. (India).

दिनांक **25.02.2012**

प्रेस विज्ञप्ति

आम में पाउडरी मिल्ड्यू (खर्रा/दहिया) रोग प्रबंधन

पाउडरी मिल्ड्यू के (अ) पत्तों, (ब) पुश्प समूह तथा (स) फलों पर लक्षण

पाउडरी मिल्ड्यू (खर्रा/दहिया) *ओडियम मैंजीफेरी* नामक फफूँद से होने वाला एक महत्वपूर्ण एवं गंभीर रोग है। इस रोग के अत्यधिक संक्रमण से फल उत्पादन में 50 प्रतिशत से ज्यादा कमी आ सकती है। इस रोग के लक्षण बौरों, पुष्पक्रमों की डंठल, नयी पत्तियों तथा फलों पर देखे जा सकते हैं। इस रोग का विषेश लक्षण सफेद कवक या चूर्ण के रूप में प्रकट होना है जिनके ऊपर अनगिनत कोनिडिया (बीजाणु) लड़ी में कोनिडियोफोर पर लगे होते हैं। यह रोग वायु वाहित कोनिडिया के द्वारा फैलता है। रोग की सबसे गम्भीर अवधि पुश्पन के समय होती है जब फफूँद के

आक्रमण से फूल गिरतें हैं। इसके प्रभाव से फूल खिल नहीं पाते तथा गिरने लगते हैं जिससे फसल को भारी क्षति होती है।

- इस रोग के फैलने के लिए अधिकतम तापमान 35^0 सें.ग्रे., न्यूनतम तापमान 15–17^0 सें.ग्रे., सापेक्ष नमी 50–60 प्रतिशत तथा हवा की रफतार 2–5 कि.मी. होनी चाहिए। यह स्थिति सामान्यतया उत्तर भारत में मार्च के मध्य में होती है।
- आम के कुछ बागों में इस रोग का प्रकोप प्रारम्भ हो चुका है। वर्तमान में तापक्रम बढ़ने के साथ इस रोग के ज्यादा प्रकोप होने की सम्भावना है। किसानों को सलाह दी जाती है कि पुष्पक्रमों को इस रोग से बचाने हेतु घुलनशील गंधक 2 ग्रा./ली. पानी के हिसाब से तथा साथ में स्टिकर (0.05 प्रतिशत) का छिड़काव तुरन्त करना चाहिये।
- पूर्ण पुष्पन की अवस्था में फफूँदनाशी का छिड़काव नहीं करना चाहिए।
- पाउड्री मिल्ड्सू एवं हॉपर के प्रबंधन के लिए कीटनाशी तथा फफूँदनाशी का सम्मिश्रण किया जा सकता है।

<u>अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–</u>

निदेशक, केन्द्रीय उपोश्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ–227107 या प्रत्येक शुक्रवार को पूर्वाह्न 10.30 बजे से अपराह्न 4 बजे तक दूरभाश सं.–0522–2841082, 2841023 के द्वारा फोन इन लाइव कार्यक्रम के तहत विशय विशेशज्ञों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।